RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/ 2024-26

पिघलता हिमालय

वर्ष 40 अंक 19 हल्द्वानी सम्वत् 2081 सोमवार 14 अक्टूबर 2024 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000 रु.

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती
स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिया,
स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल
मंगल सिंह मर्तोलिया

पूर्णागिरी का मुख्य स्टेशन टनकपुर की बदलती सूरत

कोर्ट ने रेल प्रशासन के पक्ष में दिया फैसला, अतिक्रमण पर डंडा

कार्यालय प्रतिनिधि

टनकपुर। पूर्णागिरी धाम का मुख्य स्टेशन टनकपुर अतिक्रमण की बुरी चपेट में है। चौड़ी सड़कें होने के बावजूद फुटपाथ घिरे हैं और जगह-जगह अवैध कब्जे। हालातों को देखते हुए प्रशासन ने सख्ती के मोड पर है और पिछले कुछ समय से अतिक्रमणों पर नकेल कसी जा है। इस बीच सबसे बड़ा फैसला रेलवे की जमीन का रहा। कोर्ट का रेल प्रशासन के पक्ष में दिया गया फैसला अतिक्रमणकारियों में हड़कम्प मचा गया। स्थानीय राजनीति हाबी होने लगी थी लेकिन जिस प्रकार का प्लान टनकपुर के लिये केन्द्र से तय है उसमें कब्जे हटने तय हैं। अमृत भारत योजना के अन्तर्गत रेलवे स्टेशन के सौन्दर्यीकरण में बाधक बने कब्जों को हटाने की बड़ी कार्रवाई जारी है। यही कारण है कई लोग अपने आप से भी हटने लगे।

रेलवे अधिकारियों ने बताया कि कि पूर्व में 379 अतिक्रमण चिन्हित थे जिन्हें अपने आप से हटाने को कह दिया गया। रोडवेज के पास पक्के निर्मित ढाबे को हटाने के लिये कहा और वह हटाया गया। इस बीच होटल कारोबार से जुड़े लोग बचाव करने के लिये कोर्ट का रास्ता तलाशते रहे जिन्हें राहत नहीं मिली। नगर के बार्ड संख्या तीन शास्त्री चौक के पास के लोगों ने रेलवे की ओर से की जा रही कार्रवाई पर सीएम को ज्ञापन भेजा। प्रभावितों ने कहा कि वे 72 साल से यहाँ रह रहे है। उन्होंने रहने के लिये अन्य जगह व्यवस्था कराने की मांग की।

लगातार हो रही है टनकपुर में बबाल करने की कोशिश

सूझबूझ से सुलटाने होंगे मामले, संयमित रहना है और संभलना भी है

पि.हि.प्रतिनिधि

टनकपुर। माल-भाबर टनकपुर भारत नेपाल सीमा पर प्राचीन मण्डी के रूप में जाना जाता है। अंग्रेज टनल द्वारा इस शहर के जिस मानक को माना गया था उस अनुसार खूबसूरत शहर है और चौड़ी सड़कों के साथ सुविधाएं हैं लेकिन जिस प्रकार लुकछुप यहाँ बाहर से आकर बसावट हुई है और घपलेबाजी बढ़ने लगी है, उससे यह क्षेत्र सम्वेदनशील होता जा रहा है। वर्तमान में मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के विधानसभा क्षेत्र के रूप में यहाँ विकास की बात कही जा रही है लेकिन देखने में आ रहा है कि विकास के अलावा खनन का कारोबार ही हावी है। बीच-बीच में उपजने वाले फसादों से अशान्ति का वातावरण बन जाता है। विगत दिवस कबाड़ का काम करने वाले व्यक्ति द्वारा सोशल मीडिया पर धार्मिक टिप्पणी से उबाल आ गया था। विरोध प्रदर्शन पर बड़ी संख्या में लोग सड़कों पर उतर आए। सौहार्द बिगाड़ने वाले को नगर से बेदखल करने की मांग को लेकर युवा, महिलाएं व बुजुर्गों ने जिस प्रकार प्रदर्शन किया उसे देख पुलिस प्रशासन भी डोल रहा था। सीएम तक प्रकरण पहुँचने के बाद रात में कोतवाल का स्थानान्तरण कर दिया गया।

टनकपुर में इसके अलावा भी जो माहौल उपजाया जा रहा है वह सोचनीय है। बच्चे और युवा नशे के जाल में फंसते जा रहे हैं। राजनीतिक चालबाजों के शिकार व भ्रमित युवा भी हैं जो टनकपुर जैसे शान्तिपूर्ण पहाड़ी शहर में गड़बड़ी कर रहे हैं। हल्द्वानी से भी पुराने शहरों में गिना जाने वाला टनकपुर बड़ी मण्डी माना जाता है। नेपाल और यूपी के पीलीभीत, बरेली, पूरनपुर इत्यादि इलाके के लोग यहाँ बराबर सम्पर्क में रहते हैं। पिछले एक दशक में जितनी बड़ी संख्या में बाहर से लोग यहाँ आकर बसे हैं और जमीनों का खेल शुरू हुआ है वह टनकपुर के भविष्य के लिये चिन्ता का कारण हो सकता है। शान्तप्रिय इलाके में आपराधिक घटनाएं होना ऐसा संकेत दे रहे हैं। जबकि पूर्णागिरी की मान्यता लिये इस स्टेशन में लाखों की संख्या में आस्थावान आते हैं और शारदा घाट पर डुबकी लगाते हैं। टनकपुर अन्तर्राष्ट्रीय सीमा से लगा प्रमुख शहर है। इन सारी स्थितियों को देखते हुए शहरवासियों ने सूझबूझ से काम लेना होगा और गड़बड़ी दूर करने के लिये मामले सुलटाने होंगे। किसी प्रकार की साम्प्रदायिक घपले वाली बातें न हों इसके लिये सूझबूझ दिखानी होगी और संभलना भी होगा।

पारम्परिक खेल

मुर्गा झपट यानी घुन-नी-मार

ललित सिंह मर्तोलिया

जीवन के हर काल में, हर आयु में, हरेक के लिए खेलकूद व्यायामादि की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। खेलकूद से मुनष्य स्वस्थ्य तो रहता ही है, अनुशासित भी रहता है। जीवन में सफलता के लिये यह एक जरूरी कदम है। खेलकूद से ही मनुष्य को जीवन के हर क्षेत्र में आगे बढ़ने और उस पर सफलता प्राप्त करने की एक विशेष प्रेरणा मिलती है।

असल में खेल प्रकृति प्रदत्त भी है। जन्म के साथ ही बच्चा जिस प्रकार से अपने हाथ-पांव हिलाता हुआ व्यायाम सा करने लगता है, वही उसे जल्द से जल्द चलने के लिये प्रेरित करता है और यह खेल जारी रहता है। आपस में बच्चे भी सुगम खेलों से मन बहलाते हैं। इन्हीं में एक पौराणिक, पारम्परिक खेल जो कई दशकों से जोहार-मुनस्यारी में खेला जाता रहा है- 'घुन-नी-मार'। घुन्नीमार शब्द के रूप में इसे जानते हैं याने अपने घुटने से मेरे घुटने को मत मार। कालान्तर में इसे 'मुर्गाझपट' नाम दे दिया गया।

इस रोमांचक खेल को अन्य जगह भी खेला जाता है लेकिन अपने पहाड़ में इसका नाम घुन्नीमार (घुन-नी-मार) ही है। इस मनोरंजक खेल को मैं आज 68 वर्ष की उम्र में भी खेलता हूँ और खिला रहा हूँ। इससे शरीर स्वस्थ्य और फुर्तीला रहता है। यह खेल हिमालयी क्षेत्र के लगभग सभी हिस्सों में प्रसिद्ध है। सबसे मजे की बात यह है कि इसमें किसी तरह की खेल सामग्री की आवश्यकता नहीं होती है। इसे हर वर्ग के लोग आसानी से गोलघेरे में खेल सकते हैं। इस खेल को पहली बार टूर्नामेंट के रूप में, दो टीमों के बीच 1998 में जोहार क्लब मुनस्यारी के 43 वें वार्षिक खेलकूद आयोजन में ओएनजीसी मुम्बई द्वारा थ्री रोलिंग ट्रॉफी के साथ मुर्गा झपट-98 के रूप में प्रोयोजित किया गया था। जिसे 6 जून 1998 को मुनस्यारी के प्राकृतिक स्टेडियम में पहली बार प्रायोजित कर एक नया इतिहास रचा गया था। इसमें मेरे साथ ओएनजीसी मुम्बई की मुख्य अभियन्ता रही। इसके बाद इस खेल को लगातार लगभग 12 वर्षों तक मैने प्रायोजित किया।

ये मेरा जुनून है कि जिस खेल के बारे में मैंने बचपन से खूब जाना है उसे आगे बढ़ाया जाए। यह 5 एस यानी स्ट्रेंथ, स्टैमिना, स्टाइल, स्पीड एवं स्ट्रेटजी का खेल है। यह अच्छी बात है कि इस मुर्गा झपट को राज्य स्तरीय खेलों में शामिल किया गया है और खेला जाने लगा है।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय

रामलीला मंचन और अनुष्ठान में यह सब क्या होने लगा है...

शारदीय नवरात्रि में हमारे देश के अलावा विश्व के कई देशों में रामलीला का मंचन होता है। इसमें मर्यादापुरुषोत्तम श्रीराम की लीला के साथ असत्य व सत्य की विजय का उत्सव मनाया जाता है। समाज में बुराईयों को न फैलने देने के संकल्प के साथ जगह-जगह रामलीला नाटक का यह आयोजन प्रचलित है। उत्तराखण्ड में गीत नाट्य शैली में होने वाली रामलीला का प्रचलन है। यह सब मात्र मंचन नहीं बल्कि एक धार्मिक अनुष्ठान भी है। पहाड़ की रामलीला के तो गीत-गीत भी मनमोहक हैं क्योंकि जिस प्रकार से इन्हें राग-रागनियों में ढाला गया है वह अद्भुत है।

रामलीला मंचन और अनुष्ठान के इस पूरे आयोजन को जिस श्रद्धा के साथ मनाया जाता है वह महायज्ञ ही कहा जाएगा। इस अनुष्ठान को करवाने में सामुहिकता के दर्शन होते हैं। रामलीला मंचन के लिये कोई आर्थिक सहयोग करता है, कोई मंच में अभिनय के लिये समय देता है, कोई बैठक व्यवस्था मंच व्यवस्था को संभालता है तो कोई इसकी सफलता के लिये रणनीति बनाता है। इस पूरे आयोजन में लोक जीवन की झलक होती है और बड़ी संख्या में दर्शक जुटते हैं। राम की लीला के अलावा स्थानीय कलाकारों के अभिनय की सराहना करते हुए पुरस्कार देते हैं। रामलीला इतने पवित्र आयोजन को जिस प्रकार से झुलसाने के प्रयास वर्तमान में होने लगे हैं वह गलत है।

रामलीला मंचन में नेताओं को मुख्य अतिथि के रूप में बुलाने का रिवाज इसलिये चल पड़ा था ताकि वह मंच निर्माण या अन्य प्रकार की सरकारी मद से या व्यक्तिगत रूप से आर्थिक मदद करेंगे लेकिन धीरे-धीरे यह होने लगा है कि रामलीला के प्रत्येक दिन मुख्यअतिथि बनाये जाने लगे, इसके बाद पार्टी विशेष के नेताओं या छुटभैय्यों को बुलाने का चलन हुआ। हाल यह हो चुका है कि राम जन्म, राम बारात, सीता स्वयंवर, रावण बध जैसे मंचन के दिवस को पूरी तरह से कब्जे में लेने की होड़ मचने लगी है। इसमें उनकी भीड़ ज्यादा है जो सोशल मीडिया पर अपने चेहरे-मोहरे दिखाने के लिये बेताब रहते हैं। खासकर शहरों में होने वाली रामलीला को पूरी तरह से सजावट-तरावट-दिखावट के साथ नेतागिरी के हवाले किया जा रहा है। रामलीला कमेटियों का झगड़ा भी सुनाई देता है। हुडदंग की वजह से कई जगह रामलीला मंचन बन्द हो चुके हैं। कई जगह रामलीला मैदानों पर ही अतिक्रमण हो चुका है। इसके अलावा पहाड़ में जिन स्थानों पर सुन्दर रामलीला होती थी तालीम के लिये कलाकारों का अभाव, संसाधनों का अभाव है। वह लोग धन्य हैं जो किसी प्रकार इस बड़े आयोजन को प्रतिवर्ष करवाते हैं। रामकाज बहुत ही भव्य हो लेकिन इसकी भव्यता तभी है जब इसका अनुसरण किया जाए। बहलाने के इस दौर में दिखने और दिखाने को समझना होगा। रामलीला केवल मनोरंजन के लिये नाटक मात्र नहीं यह समाज सुधार, समाज को जोड़ने वाला वृहद यज्ञ है।

देश-विदेश की प्रमुख घटनाएं

जापान में चुनाव कराने क योजना

टोक्यो। जापान के नए प्रधानमंत्री शिगेरू इशिबा ने कहा कि वह पदभार ग्रहण करने की तैयारी के तहत 27 अक्टूबर को आम चुनाव कराने की योजना बना रहे हैं। कहा कि संसद का निचला सदन 29 अक्टूबर को भंग हो हो जाएगा। उन्होंने जल्द से जल्द जनता का जनादेश प्राप्त करने के महत्व पर जोर दिया।

बांग्लादेश ने भारत से अपने राजदूत का बुलाया

ढाका। बांग्लादेश की अन्तरिम सरकार ने नई दिल्ली में अपने उच्चायुक्त सहित 5 दूतों को वापस बुला लिया है। इसके साथ ही सरकार ने घरेलू प्रशासन के साथ-साथ राजनयिक सेवा में भी दूसरे चरण का फेरबदल किया है। कूटनीतिक फेरबदल के बची सरकार का यह फैसला है।

भारत ने तैयारी की वायु रक्षा मिसाइल प्रणाली

नई दिल्ली। पड़ोड़ी पाकिस्तान और चीन की किसी भी ओच्छी हरकत को रोकने के लिये भारत लगातार अपनी सैन्य क्षमा को बढ़ा रहा है। इसी क्रम में भारत ने राजस्थान के जैसलमेर में पोकरण फायरिंग रेंज में स्वदेशी रूप से विकसित बहुत ही कम दूरी की वायु रक्षा मिशाइल प्रणी का सफलतापूर्वक परीक्षणपपा

पाकिस्तान से द्विपक्षीय रिश्तों पर नहीं होगी चर्चा

नई दिल्ली। विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने स्पष्ट किया है कि वह इस्लामाबाद का दौरा सिर्फ और सिर्फ शंघाई सहयोग संगठन शिखर सम्मेलन में हिस्सा लेने के लिए कर रहे हैं। पाकिस्तान के द्विपक्षीय रिश्तो पर करने का कोई इदारा नहीं है।

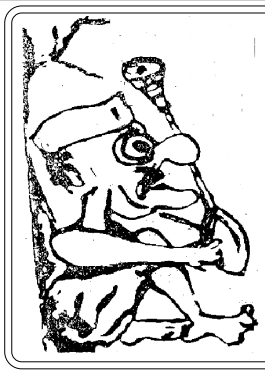

फसक

दाज्यू, रामलीला की मौज आने ही वाली ठैरी

लीलाओं का ओर-छोर पता नहीं, कुछ भी हो सकता है बल

दाज्यू, अपने मोहल्ले में रामलीला से जगमग हो रही है। रधुली अमा सहित सारे मोहल्ले वाले नियमित रूप से देखने जा रहे हैं और कलाकारों को ईनाम भी दे रहे हैं। दाज्यू, चाहे कुछ कर लो, रामलीला की मौज तो पहाड़ में ही आने वाली ठैरी। ओहो रे, कितनी सुन्दर राग रागनियां और अपने भैरु दा की जोकरिंग। इस बार सुटका भी जोकर बन रहे हैं। वैसे भी धनुष यज्ञ के दिन दो-चार ज्यादा हो जाएं तो मजा ही ठैरा।

दाज्यू, शहर वाली रामलीला में राम बारात को लेकर सड़क जाम हो गया। सारे लोकल नेता घुड़चड़ी करने लगे। बारात से पहले मेहन्दी की रश्म हुई बल। दाज्यू, हमें डर लगने लगा है कि कहीं ये सारे रिवाज हमारे गाँव में न पहुँच जाएं। यदि ये सब होने लगा तो जोकर कौन बनेगा? दाज्यू, लीलाओं का ओर-छोर पता नहीं, कुछ भी हो सकता है बल। बौई चुके लोग खुल्लम-खुल्ला सड़क पर हैं। उत्तरकाशी में 1.09 करोड़ का गबन करने वाली महिला क्लर्क पुलिस ने पकड़ रखी है। निजी स्कूल की क्लर्क ने फर्जी फीस रसीद बना कर वसूली कर ली थी बल। दाज्यू, ये सब भी विचित्र लीलाएं ठैरी। कोटाबाग की ग्रामसभा धपला में बच्चों ने शिक्षक पर छेड़छाड़ का आरोप लगाया है। छोटे बच्चों के स्कूल में शिक्षक के खतरनाक होते ही इलाके के लोग आ गये और हंगामा हुआ।

नवरात्र के दिनों में देवियों का पाठ और राम की लीला का मंचन अपनी जगह होने वाला हुआ लेकिन अपने दूसरे आसन सजा कर खपड़योव करने वालों की लीला हमारी समझ नहीं आ रही। नैनीताल के एक होटल में देर रात पर्यटकों में घमाघम हो गई। कार में तेज गाने को लेकर पर्यटकों के भिड़ने पर पुलिस बुलानी पड़ी। हल्द्वानी की भट्ट कालोनी में खड़ी कार में युवक-युवती को देख हंगामा हो गया बल। दाज्यू, ज्यादा क्या कहें? नवरात्रि की शुभकामनाएं।

-तुम्हारा भुली झकरुवा

चर्चा और लोकार्पण के कार्यक्रम

शौकी शब्दकोष बेबसाइट के साथ नई ऊर्जा मिली है

हल्द्वानी। जोहार मिलन केन्द्र में शौकी शब्दकोष बेबसाइट का लोकार्पण के साथ ही नई ऊर्जा मिली है। भाषा-बोली पर चर्चा के साथ ही नवयुवाओं को अपनी जड़ों से जुड़ने का आह्वान किया गया। गजेन्द्र सिंह पांगती द्वारा निर्मित शब्दकोष को बेबसाइट पर जोड़ते हुए सर्वसमाज के सम्मुख उपलब्ध कराने का जो कार्य किया गया है इसके लोकार्पण के मुख्य अतिथि पद्मश्री प्रो. शेखर पाठक, विशिष्ठ अतिथि आयकर आयुक्त नरेन्द्र सिंह जंगपांगी थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रहलाद सिंह मर्तोलिया और संचालन भूपेन्द्र सिंह पांगती द्वारा किया गया। शब्दकोष के बारे में हीरा सिंह धर्मशक्तू ने बताया कि सन् 2021 से इसके लिये प्रयास किये गये और अब 2024 में इसे आनलाइन स्वरूप में उतारा गया है। उन्होंने कहा कि अपने विचारों और भावनाओं को प्रकट करने के लिये जो माध्यम शौकी/जोहारी में है वह अन्य भाषाओं में नहीं। बताया कि लिंविंगटंग्स इंस्टीट्यूट फार एडेंजर्ड लैंग्वेज की मदद से बेबसाइट का यह महत्वपूर्ण कार्य हुआ है। शब्दकोष में 35000 शब्द हैं। इसके निर्माणकर्ता गजेन्द्र सिंह पांगती ने कार्य में सहयोग करने वाले सभी का आभार प्रकट करते हुए कहा कि हमें अपनी भाषा पर गर्व करना चाहिये। यह प्रयोग से ही बच सकती है। इससे पूर्व अनीता पांगती, बसन्ती टोलिया, पुष्पा धर्मशक्तू ने अतिथियों का पुष्पगुच्छ देकर स्वागत किया। मोहन सिंह बंग्याल ने रं लिपि की चर्चा करते हुए कहा कि सन् 1984 में इसकी विलुप्ति की चिन्ता पर मंथन हुआ और समाज ने जो कार्य किया वह सुरक्षित है। आज शौका समाज के इस आयोजन से वह भी रं भाषा को इसी प्रकार बेबसाइट के द्वारा और आगे बढ़ाने का प्रयास करेंगे। प्रो.उमा भट्ट ने कहा कोई भी भाषा शुद्ध नहीं होती, दूसरी भाषा के शब्द अपनाने होते हैं। भाषा समय के साथ बदलती भी है। लेकिन इसका मूल बचा रहना चाहिये। भूपेन्द्र सिंह बृजवाल और नरेन्द्र सिंह जंगपांगी ने अपनी बोली-भाषा को व्यवहार में लाने की अपील की। कहा यह प्रयास तभी सफल है जब युवा इसमें रुचि लें। प्रो.शेखर पाठक ने जोहार समाज के विशिष्ट जनों का उल्लेख करते हुए परिचयात्मक विवरण दिया। कार्यक्रम में खुशाल सिंह रावत, श्रीराम सिंह धर्मशक्तू, दीवान सिंह धर्मशक्तू, नवीन टोलिया, गोविन्द सिंह जंगपांगी सहित बड़ी संख्या में लोग मौजूद थे।

डॉ.प्रयाग जोशी के साहित्य पर केन्द्रित आयोजन

हल्द्वानी। लोकसाहित्य, इतिहास और संस्कृति के त्रिआयामी अध्येता डॉ.प्रयाग जोशी के साहित्य पर केन्द्रित आयोजन में उनके 6 दशकीय लेखन यात्रा पर चर्चा और सम्वाद का सिंथिया पब्लिक स्कूल में आयोजन किया गया। क्रियेटिव उत्तराखण्ड और समय साक्ष्य के इस आयोजन में साहित्य, संस्कृति से जुड़े लोगों ने भागीदारी की और इस प्रकार के आयोजनों को स्वस्थ समाज के लिये जरूरी बताया। प्रश्नसभा सत्र में डॉ.प्रयाग जोशी ने कहा कि वर्तमान में जब खाना-पीना तक ऑनलाइन घर मंगवाया जा रहा है, ऐसे में वह लोग महान कार्य कर रहे हैं जो पुस्तकों को घर-घर पहुँचा रहे हैं और सत साहित्य के साथ प्रकाशन कर रहे हैं, इन्हें सभी ने सहयोग करना चाहिए। कहा कि जिस प्रकार शास्त्र का अपना अनुशासन है उसी प्रकार लोक का अपना सलीका है, इसे समझने के लिये बहुत तप और श्रम की जरूरत है। प्रो.शेखर पाठक ने प्रयाग जोशी के कृतित्व को महत्वपूर्ण बताते हुए कहा कि अध्ययन क्षेत्र में इतना विस्तृत कार्य बहुत कम लोग करते हैं। समाज की स्थिति इतनी दयनीय होती जा रही है कि अखबारों का स्तर सबको पता है। लिखने वाले इतने कृतघ्न हो चुके हैं कि जिनकी चीज लेते हैं उनका उल्लेखन नहीं कर रहे। लोक शास्त्र और साहित्य पर कैसे बात हो जब 'थल का बाजार' पर समाज नाचने लगा है। समाज में कई परते हैं इन्हें समझना होगा। प्रो. दिवा भट्ट ने कहा मुझे जिज्ञासा और कौतुक है कि आज सोशल मीडिया पर दो लाइन की कविता लिखने वाले, गीतों का श्रृंगार स्वयं करने की बात करने वाले उछाल मार रहे हैं जबकि प्रयाग जोशी जी 6 दशकों के अथक परिश्रम के बाद अपने कार्य को धीरे-धीरे समाज को ला पा रहे हैं। राजि जनजाति पर लाखों का प्रोजेक्ट लेकर कार्य करने वाले वह कार्य नहीं कर पा रहे हैं जो प्रयाग जोशी जी जैसे साधकों ने अपने कम साधनों में किया। डॉ.प्रभा पन्त और डॉ. कृष्ण चन्द्र मिश्र ने डॉ.जोशी के जीवन परिचय को प्रस्तुत किया। दिनेश कर्नाटक ने उनकी साहित्य यात्रा को लेकर चर्चा की। संचालन पत्रकार चारू तिवारी द्वारा की गई। इस अवसर पर डॉ. उमा भट्ट, हरीश पन्त, राजीव पाण्डे, हेम पन्त, डॉ. पंकज उप्रेती, दयाल पाण्डे, प्रो.विपिन उप्रेती, रिस्की पाठक, श्रीमती बीना तिवारी, जगमोहन रौतेला, हयात सिंह रावत, जगदीश चन्द्र जोशी, पियूष जोशी आदि थे।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

इतिहास

पेशवा नाना साहब और रतनगिरि बाबा

डॉ. मदन चन्द्र भट्ट

नेता जी सुभाष चन्द्र बोस की तरह 1857 ई. के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के नेता पेशवा नाना साहब और बेगम हजरत महल के जीवन के अन्तिम वर्षों के बारे में अभी तक कोई ठोस प्रमाण न मिलने से स्थिति अस्पष्ट है। विद्यालयों और विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में लागू पुस्तकों में यही पढ़ाया जाता है कि कानपुर की पराजय के बाद नाना साहब अपने सहायकों के साथ बेगम हजरत महल की सहायता के लिए लखनऊ पहुँचे। वहाँ भी पराजय मिलने पर वे पीलीभीत की ओर भागे। नेपाल के राणा जंग बहादुर और उसकी गोरखा सेना 1857 ई. गदर में अंग्रेजों की सबसे बड़ी सहायक थी। ऐसे में नेपाल में अधिक समय तक टिकना नाना साहब के लिए सम्भव नहीं था। नाना तैंतीस वर्ष का था और अविवाहित था। उसके साथ उनका फ्रेन्च सेनापति भी था।

पिथौरागढ़ के शोर परगने की ग्रामीण परम्पराओं के अनुसार नेपाल में पुन्यागिरि के समीप सिद्ध बाबा के मन्दिर में नाना साहब ने जूना अखाड़ा के अन्तर्गत जोग ले लिया और 'रतनगिरि बाबा' के रूप में वे सौ वर्ष तक जीवित रहे। कुमाऊँ का कमिश्नर रामजे उन्हें पकड़ने के लिए पिथौरागढ़ के गाँवों में भटकता रहा। थोकदारों और पधानों को आधा नैनीताल नाम पर करने का प्रलोभन देता रहा लेकिन नाना साहब को नहीं पकड़ पाया। विशाड़ गाँव आज भी ढुलकुड़ मुहल्ले के चीर के आंगन में उस जगह की स्मृति जीवित है जहाँ पर बैठकर कमिश्नर रामजे ने मालगुजार ताराभट्ट के सामने प्रस्ताव रखा था कि अगर शोर में रामेश्वर, थलकेदार, अर्जुनेश्वर, मोष्टमानू और बिल्लेश्वर महादेव के मन्दिरों और धर्म-शालाओं के निर्माता बाबा रतनगिरि को नाना साहब के रूप में रूप पकड़वा दे तो उसके नाम अभी नैनीताल कर दी जायेगी।

कुमाऊँ की ओर क्रान्तिकारियों का आने का अर्थ है नाना साहब क्रान्ति से पहले एक बात कैलास मानसरोवर, नेपाल के पशुपतिनाथ और उत्तराखण्ड के बदरीनाथ कीयात्रा कर चुके थे। उसी यात्रा के दौरान वे लोहाघाट के क्रान्तिकारी नेता 'कालू महरा' से मिल चुके होंगे। नैनीताल में पहले बगवाल उसी तरह आयोजित की जाती थी जिस तरह आधुनिक समय में देविधुरा की बगवाल होती है। अल्मोड़ा के समीप 'पाटिया' और पिथौरागढ़ के समीप 'भड़कटिया' में भी बगवाल होती थी। भीमताल के समीप महरा गाँव के 'मार' घड़ वाले नैनीताल में बगवाल खेलते थे। शराब व्यापारी बैरन ने महरा गाँव वालों के पूर्वज नरसिंह को नाव में ले जाकर उससे नैनीताल की बगवाल खेलने की जगह अपने नाम करवा ली। इससे महरा जाति के लोग अंग्रेजों से नाराज थे उसी नाराजगी के कारण कालू महरा अंग्रेजों के विरूद्ध थे, उसी के भरोसे नाना साहब भी पीलीभीत तक कैलास-मानसरोवर के यात्रापथ में बढ़ते हुए रामेश्वर पहुँच गये। पीलीभीत में ही उन्हें अपने जासूसों से पता चला कि कालू महरा परास्त होकर इधर-उधर भटक रहा है। तब विवश होकर रतनगिरि के रूप में वे नेपाल के सोराड़ से रामेश्वर आ गये। सरयू और रामगंगा के संगम पर उन्होंने खलिबगड़ में अपने लिए झोपड़ी बनवायी और सन्यासी का जीवन शुरू किया। उनका फ्रेंच सेनापति भी 'भूरे बाबा' के रूप में कुटिया बनाकर रहने लगा। जब रतनगिरि भिक्षाटन के लिए पिथौरागढ़ के गाँवोंमें जाता तो अंगरक्षक के रूप में भूरे बाबा एकतारा बजाते हुए उनके पीछे-पीछे चलता था। नाना छोटे कद का और गठीले वदन का था। उसकी जटायें घुटनों तक लम्बी हो गई थीं। नहाने के बाद वह धूनी की राख से शरीर की मालिश करते थे जिससे त्वचा खुरदुरी हो गई थी। यह उनके लम्बे जीवन का प्रमाण भी थी। बेगम हजरत महल ने सन्यास नहीं लिया। वह पिथौरागढ़ के शोर और नेपाल के सोराड़ में 'काशीबाई' नाम की पगली का अभिनय करती रही, फिर भी पकड़ी नहीं गई।

विशाड़ गाँव कर्माधीश दयाराम भट्ट रामेश्वर मन्दिर के आचार्य थे। गंगोलीहाट के समीप उपराड़ा गाँव के भट्टों का पूर्वज 'अच्युत भट्ट' भी महाराष्ट्र से पहाड़ में आया था। अन्तिम पेशवा बाजीराव स्वयं तो भट्ट जाति का था लेकिन निःसन्तान होने से उसने 'धौंदू' पन्त को गोद लिया था। पिथौरागढ़ के गाँवों में सभी जगह घने जंगल थे और विशेष ऊँचाई पर छोटे मन्दिर थे। ऐसे जंगलों में अंग्रेज उन्हें नहीं पकड़ सकते थे। रामेश्वर से कैलास तक के मार्ग में कुछ मन्दिरों में 'भोग' (सदावर्त्त) की व्यवस्था थी अतः कैलास मानसरोवर और पशुपतिनाथ जाने वाले यात्रियों को निःशुल्क भोजन और आवास की व्यवस्था थी। अगर किसी साधु महात्मा के पास यात्रा का खर्च न हो तो मन्दिर समिति उसकी पर्याप्त रूप में आर्थिक सहायता करती थी। अल्मोड़ा संग्रहालय में सुरक्षित छठी सदी के तालेश्वर ताम्रपत्रों में मन्दिर समिति के लिए 'गौग्गुलिक परिषद' नाम प्रयुक्त है। 'गुग्गुलि' शब्द का एक पर्यायवाची शब्द है- 'प्रवर'। विवाह के समय वर और वधू के कुल के तीन अथवा पाँच प्रवरों के नाम बताये जाते हैं। पिथौरागढ़ में 1857 ई. में तीन गौग्गुलिक परिषद थीं जो राज्य के नियंत्रण से युक्त थीं-

1. रामेश्वर मन्दिर समिति- इसमें बिशाड़ गाँव के भट्ट आचार्य, 'जीवी' गाँव के रौतेला (चन्द) कर्माधीश, मेलडुड.री के जोशी पुजारी और चमुडुड.रा के 'गिरि' महन्त का दायित्व निभाते थे। गाँव वाले बारी-बारी से रामेश्वर में रहते थे।
2. थलकेदार मन्दिर समिति- इसमें बिशाड़ के भट्ट आचार्य, बुंगा के सोराड़ी चन्द कर्माधीश और विषराल पुजारी होते थे।
3. मोष्टामानू मन्दिर समिति- इसमें छाना गाँव के पाण्डे आचार्य, छेड़ा गाँव के पाटिनी कर्माधीश और बकरकट्या गाँव के पुजारी होते थे।

इन मन्दिर समितियों पर राजा का कोई नियंत्रण नहीं होता था। रामेश्वर के आचार्य दयाराम भट्ट को बिरादर के रूप में नाना साहब ने जब अपनी विकट समस्या बतायी तो उन्होंने अपने दो पुत्रों- इन्द्रदेव और भाबदेव के साथ कैलास यात्रा के लिए भेज दिया। तिब्बत के तकलाकोट में दयाराम जी का दुमंजिला मकान था। पहली मंजिल में तीर्थयात्री रहते थे और दुमंजिले में आचार्य और उनके साथी भोजन बनाते थे। धर्मशाले के चारों ओर मुन्स्यारी गाँव के भोटिया अपनी भेड़ों के साथ गर्मियों में रहते थे। एक गर्मी तकलाकोट के धर्मशाला में बिताकर जब नाना और उनके साथी पिथौरागढ़ के गडोली गाँव में पहुँचे तो वहाँ मन्दिरों की चिनाई जानने वाले श्री गंगाराम पाण्डे से उनका परिचय हुआ। इन्द्रदेव भट्ट और गंगाराम पाण्डे ने उन्हें राय दी कि वे अर्जुनेश्वर की गुफा के समीप एक भव्य मन्दिर बनवायें और स्थायी रूप में वहीं रहें। तकलाकोट और अर्जुनेश्वर में रहते हुए नाना साहब एक सिद्धि प्राप्त सन्यासी बन गये। उनकी सिद्धि का एक रोचक किस्सा है। जब अर्जुनेश्वर में मन्दिर के पास दुमंजिला धर्मशाला बन गया तो उसकी छत के लिए पटालों की खान थी जो दस किमी की दूरी पर था। इन्द्रदेव जी के पुत्र हरिदत्त भट्ट और गंगाराम पाण्डे की देखभाल में श्रमदान से मन्दिर बन रहा था। शाम को हरिदत्त जी ने बाबा से कहा- मैं घर जाता हूँ, कल छेड़ा से पत्थर लाऊंगा। छोड़ा से कुलियों के पाथर लाने से अंग्रेजों को नाना साहब के बारे में पता चल सकता था, बाबा ने हरिदत्त जी से कहा- आज यहीं रहो, कल सुबह भामा के जंगल में पाथरों की खान का पता लगायेंगे। जब तीनों पाथरों की खोज में जंगल में भटक रहे तो एक जगह बाबा ने अपना कमण्डल रख दिया और कहा- यहाँ पर खोदो। श्रमदान से जब खोदा गया तो उतने ही पाथर निकले जितने धर्मशाला के लिये जरूरत थी। आज भी 'मासू' गाँव के लोग उस जगह को 'पत्थर खानी' कहते हैं।

रतनगिरि बाबा ने अन्तिम मन्दिर बिशाड़ गाँव विल्वेश्वर महादेव के नाम से बनवाया। उसकी प्रतिष्ठा के दिन उन्हें आभास हो गया कि अंग्रेज कमिश्नर रामजे ने उन्हें पकड़ने की तैयारी कर रखी है। वे प्रातः पाँच बजे उठे, स्नान-ध्यान के बाद उन्होंने भैरवनाथ की 'रोट' (प्रसाद) बनाया, मन्दिर की अकेले प्रतिष्ठा की और अन्धेरे में पनेर भट्यूड़ जाकर रोट के साथ अपनी तलवार श्री लोकमणि भट्ट को दी, फिर बदरीनाथ की ओर खिसक गये। बदरीनाथ में कुमाउंनी धर्मशाले में सौ वर्ष की आयु में उनकी मृत्यु हुई। उस समय पटवारी श्री गौरीदत्त भट्ट के नेतृत्व में बिशाड़ गाँव के स्त्री-पुरुषों का एक दल बदरी-केदार की यात्रा के लिये बदरीनाथ गया था और उसी धर्मशाले में टिका हुआ था जहाँ पेशबा रहता था। नाना की झोली में पाँच पत्र मिले जो फारसी भाषा में थे, वे पढ़े नहीं जा सके। नाना कि सभी साथी पहले ही मर चुके थे। वे स्वयं अकेले घूमते रहते थे।

टिहरी नरेश के चचेरे भाई कैप्टन शूरवीर सिंह पँवार यह मानते थे कि उत्तरकाशी के एक मकान में नाना साहब कई महिनों तक रहे। उनके गुजरात में रहने की भी शंका की गई है। सौभाग्य से पिथौरागढ़ में अब राजकीय संग्रहालय बन गया है। स्थानीय थोकदार अपने संग्रह को संग्रहालय में दे दें तो नाना साहब के अन्तिम दिनों की बातें विस्तार से पता चल सकती हैं।

कदू मज उं

कि- कि जै कूं
कै-कै छै जै कूं
अहा तब बड़ौ मज उं
जब-जब भायो यस-यस करूं।
नौटन गिणन में जब थूक लगूँ
कर्जाक रूपै नक जब ब्याज मिलूँ
बैंक है करारे नोट थामूँ
आमाक् पेंशन में है,
फ्री में कमीशन मिलूँ
अहा तब.....
सावाक् हाथन् में जब चिम काटूँ
साग्रक् कानन् में अंवुनलि हाणूँ
लचिक् बेर सासु थै पैलाक् कूँ
सोरज्यून कै असली वाल् पव्वू पिवूँ
अहा तब.....
जेठि सासु कै जब भुट्टु खवूं
साढाड़ भा तै चिकन बणूं
सौरासिन कै पुज में न्यूतूं
बिरादरन् के सूप में टावूं
अहा तब.....
भा भतिजन कै काम में लगूं
मनखन थैं, तों क्या नै करन कूं
बस कसै है जाओ थैं
ऋण थैं क्या कमी न राखूं
अहा तब.....
अफुहि मलाग्र दुहार कै पाणि हाइ पीवूं
डाडूल् मथौलौक् दै निकावूं
चमुचैलि दाणदार घ्यु गाणूं
टड्ड् अंवूलि मौ निकाइ चाटूं
अहा तब.....
दुहार थै कर-कर कैइ
ऋं किर्ना हि बाट् काटूं
दुसराक् गाइ में गोदान करि
खुद भल् बणूं
अहा तब.....।

-दीवान सिंह कठायत
प्रधानाध्यापक, मुपो राईआगर।

ज्योतिष की बातें- 199

17 अक्टूबर 2024 को सूर्य अपनी नीचराशि तुला में प्रवेश करेगा। वहाँ पर कोई शुभ दृष्टि भी नहीं होगी। अतः सूर्य अत्यन्त निर्बल रहेगा। फिर भी सूर्य अगले एक माह स्वास्थ्य, सम्मान आदि अपने कारण विषयों में सिंह, वृषभ, मकर व धनु राशि के जातकों को अल्पमात्रा में शुभफल प्रदान करेगा। अन्य जातकों को अल्पमात्रा में शुभफल प्रदान करेगा। अन्य जातकों को अभी धैर्य रखना चाहिए।

20 अक्टूबर 2024 को मंगल अपनी नीचराशि कर्क में प्रवेश करेगा। वहाँ पर कोई शुभ दृष्टि या युति भी नहीं होगी अतः मंगल अत्यन्त निर्बल ही रहेगा। फिर भी चूंकि त्रिषडाय स्थानों पर मंगल शुभफल प्रदान करता है। अतः मंगल खेलकूद, मकान, वादन आदि अपने कारक विषयों में अगले 92 दिन वृषभ, कुम्भ व कन्या राशि की जातकों को अल्प मात्रा में शुभफल प्रदान करेगा। अन्य जातकों को अभी प्रतीक्षा करनी चाहिए।

कोजागिरी पूर्णिमा, शरद पूर्णिमा- यह पर्व अश्विन शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा प्रदोष एवं निशीथ अभयव्यापिनी तिथि में मनाया जाता है। तदनुसार बुधवार 16 अक्टूबर 2024 को शरद पूर्णिमा का पर्व मनाया जाएगा।

करक चतुर्थी अर्थात् करवा चौथ- कार्तिक कृष्णपक्ष चतुर्थी चन्द्रोदय व्यापिनी तिथि में करवा चौथ का व्रत किया जाता है। तदनुसार रविवार 20 अक्टूबर 2024 को सुहागिनी महिलाएँ करवा चौथ का व्रत सम्पन्न करेंगी।

शुभं भवतु !!

-ओंकार नाथ कोष्टा
ज्योतिर्विद् एवं आयुर्विद्

सम्यक् विचार- 90

हथियारों का कारोबार

दुनिया में जब भी कहीं लड़ाई होती है तो लोगों को लगता है कि अब विश्व युद्ध शुरू होने वाला है। रूस यूक्रेन का युद्ध, एक साल से अधिक हो गया है, निरन्तर गतिमान है। युद्ध न तो थम रहा है, न ही बढ़ रहा है और न ही कोई युद्ध का निर्णय हो पा रहा है। फिलिस्तीन इजराइल का युद्ध भी सालों साल चलने वाला है। जनता इन्तजार कर रही है कि कब विश्व युद्ध शुरू हो और मैं अगर अपनी आँखों से विश्व युद्ध को होते हुये देखूँ। बहुत से लोग यह सोचकर मन ही मन में प्रसन्न भी होते हैं कि दूसरे सम्प्रदाय अर्थात् हमारे विरोधी अब खत्म हो जाएंगे, दुनिया की आबादी अब कम हो जाएगी। हजार दो हजार अथवा दो चार लाख सैनिक यदि वीरगति प्राप्त कर भी लें तो भी विश्व की 800 करोड़ की आबादी में कोई प्रभाव नहीं पड़ने वाला। न ही उसे विश्व युद्ध कहा जा सकता है। ये जो छोटी-मोटी लड़ाइयाँ विश्व में दिखाई पड़ रही हैं, ये वास्तव में हथियारों के प्रयोग स्थल है। नए-नए हथियारों का निर्माण होता है और उनका परीक्षण किया जाता है। इस समय विश्व के कई बड़े देश हथियारों का व्यापार बड़े पैमाने पर करते हैं। बहुत से देश इन हथियार माफियाओं के चंगुल में फंसकर बर्बाद हो रहे हैं। यदि विश्व में लड़ाइयाँ नहीं होंगी तो उनके हथियारों का क्या होगा! इसलिए इन छोटी-मोटी लड़ाइयों में विश्व युद्ध की कल्पना न करें बल्कि इसे हथियारों का व्यापार ही समझें।

-सरल

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

तेजम अस्पताल बेहाल हो चुका है

नाचनी। तेजम तहसील मुख्यालय में 62 वर्ष पूर्व स्थापित ऐलोपैथिक अस्पताल का भवन व आवास जीर्णशीर्ण हालात में है। तल्ला जोहार के 50 और बागेश्वर जिले के 20 गाँवों की 60 हजार से ज्यादा जनसंख्या के लिये 1962 में स्थापित इस अस्पताल के हालात देख सुधार किया जाना चाहिये।

बड़ा बाजार का सौन्दर्यीकरण हो

नैनीताल। भाजपा व्यापारी प्रकोष्ठ की बैठक जिला सहसंयोजक आशीष बजाज की अध्यक्षता में हुई। जिसमें व्यापारियों ने बड़ा बाजार सौन्दर्यीकरण की मांग करते हुए कहा कि इससे व्यापारियों को लाभ होगा। बैठक में सदस्यता अभियान पर भी चर्चा की गई।

छलमाछिलासों के ८४ परिवार खतरे में

धारचूला। आपदा ग्रस्त छलमाछिलासों गाँव के 84 परिवार अभी तक खतरे में हैं। ग्रामीणों ने प्रदर्शन करते हुए विस्थापित करने की मांग की है। पूजा वर्मा के नेतृत्व में तहसील में प्रदर्शनकारियों ने कहा कि 2015-16 की आपदा के बाद से उनकी कोई सुध नहीं ले रहा है। 2019 में प्रशासन ने 136 परिवारों के विस्थापन की सूची तैयार की थी लेकिन अब तक केवल 56 परिवार की विस्थापित हो सके हैं। 2022 में सीएम की घोषणा के बाद भी कोई कार्रवाई नहीं हो रही है।

टी-पर्यटन के रूप में विकसित होंगे बागान

चम्पावत। कुमाऊँ आयुक्त दीपक रावत ने क्षेत्र के टी गार्डन, शिलिंगटाक, फुंगर, झालिमाली आदि गाँवों का निरीक्षण किया। उन्होंने जैविक चाय की प्रोसेसिंग संबंधी सम्पूर्ण जानकारी ली। कहा कि चाय बागानों में अपनेक पर्यटक घूमने आते हैं। अन्य प्रदेशों की तहत यहाँ के चाय बगानों में भी अधिक पर्यटक आएं, इसके लिए इन्हें टी-बागानों के रूप में विकसित किया जाए।

मकरासुर के पुतले को प्रथम स्थान

अल्मोड़ा। नगर में दशहरा महोत्सव 2024 की तैयारियां शुरू हो चुकी हैं। नगर निगम सभागार में दशहरा समिति की बैठक में गत वर्ष की पुतला कमेटियों को पुरस्कार दिये गये। इसमें राजपुर मोहल्ले में बनाए गए मकरासुर के पुतले को प्रथम स्थान मिला। इसे 15 हजार रुपये नकद और ट्राफी दी गई।

टैक्सी संचालन को लेकर समाधान हो

धारचूला। आदि कैलास यात्रा मार्ग पर जिला मुख्यालय और बाहर से आ रही टैक्सियों को रोके जाने को लेकर खड़े हुए विवाद का समाधान करने की मांग की है ताकि यात्रा बिना व्यवधान के हो और कारोबारियों का हित भी बना रहे।

पहली बार ओल्ड लिपू से कैलास दर्शन पर गया यात्री दल

पिथौरागढ़। शिवभक्तों को अब भारत की ओर से चीन में स्थित कैलास पर्वत और मानसरोवर के दर्शन होंगे। जिले में स्थित ओल्ड लिपू से कैलास दर्शन यात्रा के लिये पहला यात्री जत्था गया। राजस्थान, मध्य प्रदेश और चण्डीगढ़ के चार पुरुष व एक महिला यात्री इस दल में रहे। चार अक्टूबर को यात्री दल हेलीकाप्टर से गुंजी पहुँचा।

बताते चलें कि पवित्र कैलास मानसरोवर यात्रा कोराना काल से लगातार बन्द चल रहा था। अब भारत में ही कैलास दर्शन की शुरुआत होने से खुशी का माहौल है। कुमाऊँ मण्डल विकास निगम द्वारा संचालित इस यात्रा का प्रथम 5 सदस्यीय दल में मनोहर लाल, मोहनी नीरज, अमनदीप कुमार, केवल कृष्ण और नरेन्द्र कुमार थे। यात्रियों ने सड़क मार्ग से आदि कैलास के दर्शन के बाद वाहन से कालापानी, नावीढांग से ओम पर्वत के दर्शन किये। इसके उपरान्त समुद्र तल से 18 हजार फीट की ऊँचाई पर स्थित ओल्ड लिपू पहुँच कैलास पर्वत व मानसरोवर के दर्शन किये।

आंखिर क्या है ये आइटीआइ गैंग जो हल्द्वानी में बदमाशी करता रहता है

हल्द्वानी। शहर में आइटीआइ गैंग के नाम पर जो दहशत बनी हुई है, आंखिर यह है क्या? इन दिनों पुलिस ने सख्ती करते हुए गैंग के दर्जनभर लड़कों को जेल भेज दिया है।

असल में आज से तीस साल पहले रामपुर रोड आइटीआइ इलाके के दो चार दबंग युवा थे और अक्सर मारपीट होती थी। यह प्रचार हो गया कि आइटीआइ क्षेत्र वालों से किसी को उलझना नहीं है वरना मार-पिटाई होगी। समय के साथ सब शान्त हो गया लेकिन पिछले चार साल में एकएक फिर से बिगड़ैल युवाओं की टोली बनी जिसे आइटीआइ गैंग नाम से पहचान मिली। कई जगह झगड़े-फसाद में यह लड़के शामिल रहे। इन भय इतना हो गया कि न जाने कब आकर उपद्रव करने लगें। इन पर नकेल कसने के लिये पुलिस ने उपाय किये और पकड़-धकड़ होती रही लेकिन गैंग सक्रिय बना हुआ है। इस बीच नुमाइश के दौरान घपलाबाजी करने में भी इस गैंग का नाम आया। अपनी दादागिरी के लिये सिक्का जमा चुके गैंग के बिगड़ेलों को पुलिस ने पकड़ा था।

गैंग की लगातार बढ़ रही हरकतों के पीछे छुटभैय्यों का संरक्षण भी बताया जाता है। इधर डीजीपी अभिनव कुमार के हल्द्वानी दौरे के दौरान शहर में नासूर बन चुके इस गैंग की चर्चा हुई तो उन्होंने सख्ती के निर्देश दिये। इस पर एसएसपी प्रहलाद नारायण मीणा ने पुलिस को तेजी के लिये कहा और गैंग लीडर सहित 11 बदमाशों की पकड़ हुई। इन्हें गैंगस्टर एक्ट के तहत दर्ज प्राथमिकी के आधार पर गिरफ्तार कर लिया गया। पुलिस ने गैंग से जुड़े और कई बदमाशों की सूची तैयार की है।

आइटीआइ गैंग ने सड़क से लेकर सार्वजनिक स्थानों पर जिस प्रकार से उपद्रव किया है वह भय का वातावरण है। मई 2022 में शीशमहल में कुछ युवाओं की पिटाई के बाद बवाल को साम्प्रदायिक तनाव के रूप में देखा गया। इसके बाद से लगातार झगड़ों में इस गैंग का नाम आता रहा है। लागातार मिल रही शिकायतों के बाद पुलिस ने नासूर बन चुके गैंग पर कुचलने के लिये तैयारी कर ली है।

होकरा में मोबाइल टावर लगने की खुशी

नाचनी। सुदूर क्षेत्र होकरा में मोबाइल टावर लगने से क्षेत्रवासियों में खुशी है, इससे मोबाइल फोन सुविधा का लाभ होगा और सुख-दु:ख में सम्पर्क अपनों से सम्पर्क की स्थिति बनी रहेगी।

बागेश्वर जनपद की सीमा पर स्थित मुनस्यारी के होकरा क्षेत्र की जनता की जनता वर्षों से टावर की मांग कर रही थी। गाँव में बीएसएनएल का टावर तैयार हो चुका है जिससे मोबाइल की घण्टी सकून दे रही है।

बताते चलें कि होकरा क्षेत्र संचार मामले में भी अति पिछड़ा था। क्षेत्रवासी सड़क, संचार, शिक्षा जैसी मांगों को लेकर कई बार आन्दोलन कर चुके हैं और शासन-प्रशासन तक अपनी बात पहुँचाते रहे हैं। ग्रामीणों की समस्या देखते हुए प्रशासन ने बागेश्वर जिले के सामा में लगे टावर से होकर तक सिग्नल बढ़ा कर सेवा आरम्भ की लेकिन इससे विशेष लाभ नहीं मिला। ऐसे में बीएसएनएल ने इलाके में मोबाइल टावर लगाने का निर्णय लिया।

पन्तनगर किसान मेला में मुख्यमंत्री

पन्तनगर। पन्तनगर विश्वविद्यालय परिसर में प्रतिवर्ष दो बार लगने वाले किसान मेले की श्रृंखला में 116वें मेले का उद्घाटन मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने किया। गांधी हॉल में किसानों को सम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा कि ऐसे किसान मेले किसानों की उन्नति में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। मेले में नौ प्रगतिशील किसान भीम सिंह महर, ओमवीर सिंह, केशर दत्त, लक्ष्मी देवी, प्रताप सिंह, इन्दर सिंह नेगी, शंकर सिंह बिष्ट, अनिल दीप सिंह को सम्मानित किया गया।

कुलपति डॉ.मनमोहन सिंह चौहान ने विवि की प्रगति की जानकारी देते हुए बताया कि पूरे देश में दलहन की 28 प्रजातियों के बीज स्वीकृत हुए हैं जिनमें से 10 प्रजातियां पन्तनगर विवि की हैं। बताया कि बद्री गाय का क्लोन भी विवि में तैयार किया जा रहा है। इस मौके पर प्रतिनिधि, किसान व दर्शक मौजूद थे।

काशीपुर मुख्य सड़कों से अतिक्रमण हटा

काशीपुर। लोनिवि ने टांडा तिराहे से सरवरखेड़ा तक अतिक्रमण हटाओ अभियान चलाते हुए मुख्य सड़कों पर लगाए गए फड़ खोखों को हटाने की कार्यवाही की। इस दौरान अधिकारियों ने अतिक्रमण के हटाए जाने के बाद फिर से अतिक्रमण करने का प्रयास करने वालों पर कार्यवाई की चेतावनी दी। यहाँ लोनिवि ने तहसील और पुलिस प्रशासन की मददसे अभियान चलाया। मुरादाबाद रोड पर टांडा तिराहे से सरवरखेड़ा तक सड़क किनारे लगे खोखे व फड़ आदि हटाए गए। कुछ स्थानों पर टीम को हल्के विरोध का सामना करना पड़ा लेकिन पुलिस बल व प्रशासन की सख्ती के सामने उनकी एक न चली। लोनिवि के सहायक अभियन्ता परवेज आलम ने बताया कि अतिक्रमणकारियों को कई बार उनके द्वारा नोटिस दिया जा चुका है लेकिन उन्होंने कब्जे नहीं हटाया। बताया अब मण्डी चौकी से सूर्या रोशनी तक भी अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई की जाएगी। तहसीलदार पंकज चन्दोला ने फिर से कब्जा करने वालो को चेताया।

भारत-कजाक सैन्याभ्यास औली में

चमोली। भारत-कजाकिस्तान संयुक्त सैन्य अभ्यास काजिंद उत्तराखण्ड औली में जारी है। भारत-कजाकिस्तान संयुक्त सैन्य अभ्यास काजिन्द 2024 का 8वां संस्करण 13 अक्टूबर तक चलेगा। इसमें भारतीय टुकड़ी का प्रतिनिधित्व मुख्य रूप से पांचवी बटालियन कुमाऊँ रेजीमेंट के अलावा भारतीय वायु सेना तथा सेना के अन्य आर्मी कर्मियों द्वारा किया जा रहा है।

जोहार महोत्सव 8-9-10 नवम्बर

हल्द्वानी। जोहार महोत्सव 2024 इस बार 9 व 10 नवम्बर को मनाया जायेगा। इसकी तैयारी को लेकर आयोजित बैठक में समिति से जुड़े लोगों ने विचार-विमर्श कर अपने सुझाव दिये। कहा गया कि प्रतिभाग के लिये बाहर से आने वाले विशिष्ट जनों के साथ ही स्थानीय भागीदारी अधिकाधिक हो। आयोजन के लिये कमेटियों को उनकी जिम्मेदारी दी गई ताकि अनुशासन बना रहे।

परिक्रमा

हरिप्रदर्शन की तैयारियां शुरू

मुनस्यारी। मल्ला दुम्मर में प्रतिवर्ष की भांति इस बर भी 5, 6, 7 नवम्बर को होने वाली हरिप्रदर्शन की तैयारियां शुरू हो चुकी हैं। स्वतंत्रता संग्राम सेनानी हरि सिंह जंगपांगी को याद करते हुए हर बार तीन दिवसीय इस आयोजन का सबको इन्तजार रहता है। इसके लिये हरि स्मारक समिति और विभिन्न जगह रह रहे जंगपांगी बन्धु विशेष रूप से सक्रिय हैं।

बालिकाओं के लिए 480स्थान असुरक्षित

हल्द्वानी। डीएम वन्दना सिंह ने कैम्प कार्यालय में महिला सुरक्षा समिति की बैठक ली। समिति ने 38 स्थानों में स्कूलों की बच्चियों के साथ कार्यशाला की है। बताया कि बालिकाओं के लिये 480 स्थान असुरक्षित हैं। डीएम ने कहा कि असुरक्षित स्थानों पर सिटी मजिस्ट्रेट, पुलिस और परिवहन विभाग शाम के मसय एनफोर्समेंट करें। राजस्व, नगर निगम और पुलिस सत्यापन करेगा।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

खतरनाक है बोतलबन्द पानी, प्रतिबन्ध का आदेश रहा बेअसर

डॉ. हरीश चन्द्र अन्डोला

बोतलबन्द पानी आम लोगों और पृथ्वी पर गहरा प्रभाव डाल रहा है। ब्रिटिश मेडिकल जर्नल ग्लोबल हेल्थ में प्रकाशित एक रिपोर्ट के अनुसार दुनिया में करीब 200 करोड़ लोग ऐसे हैं जो आज भी सुरक्षित पेयजल से दूर हैं, यदि उनतक पीने का साफ पानी पहुँच भी रहा है तो वो बहुत सीमित है। ऐसे में यह बोतल बन्द पानी उनकी मजबूरी है।लेकिन हममे से कही लोगों के लिए यह सुविधा और विश्वास का मामला है। बोतल बन्द पानी का व्यापार करने वाली कम्पनियां अक्सर ऐसे प्रस्तुत करती हैं कि बोतल बन्द पानी, नलजल की तुलना में कहीं ज्यादा सुरक्षित और स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद है। हालांकि कतर स्थित वेइल कॉर्नेल मेडिसिन और अध्ययन से जुड़े शोधकर्ताओं के मुताबिक यह हमेशा सच नहीं होता। इस बारे में शोधकर्ताओं ने प्रेस विज्ञप्ति के हवाले से कहा है कि बोतलबंद पानी, हमेशा नल जल की तरह सख्त गुणवत्ता जाँच से नहीं गुजरता। विशेषज्ञों के मुताबिक प्लास्टिक की बोतलों से हानिकारक केमिकलों के रिसने का खतरा बना रहता है, खासकर अगर पानी को लंबे समय तक इन बोतलों में स्टोर किया जाता है, या फिर इन्हें धूप या बेहद अधिक तापमान में छोड़ दिया जाता है। देखा जाए तो कई ब्राण्ड पानी को सुरक्षित और बेस्ट क्वालिटी का दावा करके बेच रहे हैं। लेकिन जिसे हम अमृत समझ कर पीते हैं उस पानी में कई ऐसे घटक हो सकते हैं जो हमारे स्वास्थ्य पर गहरा प्रभाव डाल सकते हैं।

अध्ययन से पता चला है कि बोतलबन्द पानी के दस से 78 फीसदी तक नमूनों में दूषित पदार्थ होते हैं। यहाँ तक कि इनमें माइक्रोप्लास्टिक जैसे प्रदूषक भी पाए गए हैं, जो हार्मोन को प्रभावित कर सकते हैं। इसके साथ ही बोतलबन्द पाने में अन्य हानिकारक पदार्थ जैसे कि फथलेट्स और बिस्फेनॉल ए भी पाए गए हैं। गौरतलब है कि फथलेट्स का उपयोग प्लास्टिक को मजबूत बनाने के लिए किया जाता है। शोधकर्ताओं के मुताबिक माइक्रोप्लास्टिक की मौजूदगी से आक्सीडेटिव तनाव, प्रतिरक्षा प्रणाली में कमजोरी और रक्त में वसा के स्तर में बदलाव जैसी समस्याएं पैदा हो सकती हैं। वहीं बीपीए के सम्पर्क में आने से जीवन में आगे चलकर स्वास्थ्य समस्याएं हो सकती हैं। इनमें उच्च रक्तचाप, हृदय रोग, मधुमेह और मोटापा शामिल हैं। वहीं इन दूषित पदार्थों के लम्बे समय में क्या प्रभाव पड़ेंगे इस बारे में अभी भी बहुत अधिक जानकारी नहीं है। इस बात की भी आशंका है कि माइक्रोप्लास्टिक हमारी खाद्य श्रृंखला में भी प्रवेश कर सकते हैं। शोध के मुताबिक नलजल एक पर्यावरण अनुकूल विकल्प है। दूसरी तरफ प्लास्टिक से बनी बोतलें समुद्र में बढ़ते प्रदूषण का दूसरा सबसे आम प्रदूषक हैं। यह कुल प्लास्टिक कचरे का करीब 12 फीसदी हिस्सा हैं। अनुमान है कि महज नौ फीसदी बोतलों को ही रीसाइकिल किया जाता है, जबकि अधिकांश लैंडफिल में चली जाती हैं, या फिर जला दी जाती हैं। वहीं इनमें से कुछ को प्रबन्धन के लिए कमजोर देशों को भेज दिया जाता है। ऐसे में निष्पक्षता और सामाजिक न्याय को लेकर चिन्ताएं बढ़ जाती हैं। प्लास्टिक की बोतलों से पैदा हो रहे कचरे के साथ-साथ, इनके लिए कच्चे माल की जरूरत होती है, साथ ही निर्माण के दौरान बहुत ज्यादा उत्सर्जन होता है। जो पर्यावरण के साथ-साथ जलवायु पर गहरा असर डालता है। शोधकर्ताओं का कहना है कि हालांकि रेस्तरां और सार्वजनिक स्थानों पर पेयजल उपलब्ध कराने के साथ-साथ सिंगल यूज प्लास्टिक के उपयोग को कम करने के

प्रयास किए गए हैं, लेकिन अभी भी बहुत कुछ किया जाना बाकी है। शोधकर्ताओं का सुझाव है कि सरकारी कार्रवाई और जागरूकता अभियान इस दिशा में लोगों की सोच और व्यवहार को बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। इन अभियानों में लोगों को नलजल से पर्यावरण और स्वास्थ्य को होने वाले फायदों के बारे में जागरूक करना चाहिए। इससे ज्यादा से ज्यादा लोगों की आदतों में सकारात्मक बदलाव आएगा।अध्ययन में जो निष्कर्ष सामने आए हैं उनके मुताबिक बोतलबन्द पानी पर निर्भरता से स्वास्थ्य, धन और पर्यावरण को भारी नुकसान होता है। ऐसे में इसके बढ़ते उपयोग पर दोबारा विचार करने की जरूरत है। सरकारों को भी, खास तौर पर कमजोर देशों में सुरक्षित पेयजल से जड़े बुनियादी ढांचे में निवेश के लिए तत्काल कदम उठाने चाहिए। रिसर्च रिपोर्ट के मुताबिक, कम्पनी के बीच बोतलबन्द पानी के कारोबार को लेकर बढ़ती प्रतिस्पर्धा सूखे के हालात बना रही है। दुनिया के कई ऐसे हिस्से हैं जहाँ पर इस कारोबार की कीमत किसान चुका रहे हैं। जमीन का जलस्तर घटने के कारण उन्हें खेती-किसानी के लिए पर्याप्त पानी नहीं मिल पा रहा है। क्लाइमेट चेंज के कारण पहले ही बारिश का स्तर साल दर साल घट रहा है। ऐसे में नया रिकार्ड तनाव को बढ़ा रहा है जलवायु परिवर्तन का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से पानी पर महत्वपूर्ण असर पड़ता है। भारत जैसे सम्वेदनशील देशों में इसके गम्भीर सामाजिक और आलृथक असर देखने को मिलते हैं। लाखों गरीब लोग तेजी से घटते विश्वसनीय जल संसाधनों, बड़े पैमाने पर वेटलैंड में आ रही गिरावट और बदतर जल प्रबन्धन के साथ जीने के लिए संघर्ष कर रहे हैं।जल संसाधन तेजी से घट रहे हैं और खराब भी हो रहे हैं। बदलते बारिश के पैटर्न के कारण सतही जल उपलब्धता में गिरावट से भूजल पर निर्भरता बढ़ती है।

अधिक निकासी और बदलते मौसम व वर्षा की तीव्रता के परिणामस्वरूप, भारत के कई हिस्सों में भूजल स्तर खतरनाक दर से घट रहा है। तटीय क्षेत्रों में यह एक्वीफर्स (भूमिगत जल संग्रहण करने वाले चट्टान) में लवणता पैदा करती है। पानी की कमी लोगों के बीच आवंटन और टकराव का कारण बनती है। जलवायु परिवर्तन के प्रभाव खाद्य सुरक्षा पर दिखने के साथ जल सुरक्षा के लिए भी प्रत्यक्ष होंगे। अन्तरराष्ट्रीय खाद्य नीति अनुसंधान संस्थान के एक हालिया अध्ययन में पाया गया कि दुनिया की आधी से अधिक आबादी और वैश्विक अनाज उत्पादन का लगभग आधा हिस्सा 2050 तक पानी की कमी के कारण जोखिम में होगा। बाढ़ या सूखे जैसी स्थिति के कारण कृषि किलता ग्रामीण अर्थव्यवस्था को प्रभावित करती है।

ग्रामीण भारत के बड़े हिस्सों में जीवन अब भी ख्रषि पर निर्भर करता है। बाढ़ और लंबे समय तक सूखे जैसी आपदाएं चिन्ता-सम्बन्धी प्रतिक्रियाओं के साथ-साथ मानसिक स्वास्थ्य सम्बन्धी विकारों का कारण भी बनती हैं। भारत में हजारों किसानों ने पिछले कुछ दशकों में आत्महत्या की है। 21वीं सदी के अन्त तक जलवायु परिवर्तन से सूखे की घटनाएं और तीव्रता में वृद्धि होने की आशंका है और दुनिया का एक बड़ा हिस्सा अकाल का अनुभव कर सकता है। भोजन की कमी या भोजन की गुणवत्ता के मुद्दे भी मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकते हैं। कृषि के अलावा, मत्स्य क्षेत्र में सम्भावित संकट भी खाद्य सुरक्षा के लिए खतरा है। जलीय प्रजातियां आमतौर पर पानी के तापमान के प्रति अधिक संवेदनशील होती हैं और जलवायु परिवर्तन से मछली का विकास भी प्रभावित होता है। बाढ़ और सूखे के साथ जुड़े पानी से सम्बन्धित स्वास्थ्य मुद्दे भी पैदा हो रहे हैं। बाढ़ ताजे पानी की आपूर्ति को दूषित करती है, जल-जनित बीमारियों के जोखिम को बढ़ाती है और रोग फैलाने वाले कीड़ों के लिए प्रजनन आधार बनाती है। ये इन्सानों के डूबने और शारीरिक चोटों, घरों को नुकसान पहुँचाने और चिकित्सा और स्वास्थ्य सहित आवश्यक सेवाओं की आपूलृत को बाधित करती हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने चेतावनी दी है कि तेजी से परिवर्तनशील वर्षा पैटर्न से मीठे पानी की आपूर्ति प्रभावित होने की सम्भावना है। सुरक्षित पानी की कमी स्वच्छता से समझौता कर सकती है और डायरिया रोग के खतरे को बढ़ा सकती है, जो हर साल पांच लाख से अधिक बच्चों की मौत का कारण बनता है। सुरक्षित पानी की कमी अक्सर जल संसाधनों में पानी के बंटवारे को लेकर विवाद का कारण बनती है। हमने जिन देशों से औद्योगीकरण का नमूना अपनाया है उन देशों से यह नहीं सीखा कि उन्होंने अपने प्राकृतिक संसाधनों को कैसे बचाया। यही कारण है कि वहाँ की नदियां तालाब, बांध हमारी तुलना में ज्यादा शुद्ध और निर्मल हैं। स्वच्छ पेयजल देश के नागरिकों का संवैधानिक अधिकार है लेकिन इसे साकार रूप देने की बजाय सरकारें जल को लाभकारी उत्पाद मानकर चल रही हैं।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

शारदीय नवरात्रि की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ-

श्रीमती निर्मला (नीमा) मनोहर सिंह मर्तोलिया

डायमण्ड विला
त्रिलोक नगर, मल्ली बमोरी, हल्द्वानी

Hotel Bala Paradise
Tiksain, Munsiari
Ph. 05961222237, 9412951678

धमोत होम स्टे
धरमघर/चकोड़ी

Hayat Paradise
Bus Station
Munsiari
Ph. 09411556700, 9997733070

न तेरा न मेरा Thats
APNA GHAR चौकोड़ी
HOTEL RESTRO BANQUET
YOGA MEDITATION | LIVE MUSIC | HOMELY FOOD | BIRTHDAY WEDDING
मो.- 9458920379, 6396098804
Near by- (माँ कोटगाड़ी, नौलिंग देव, पातालभुवनेश्वर)
पितृछाया- स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व. जोगासिंह मर्तोलिया

माँ नन्दा आयरन एण्ड बिल्डिंग मैटेरियल
भोटिया पड़ाव, हल्द्वानी
(सीमेन्ट, सरिया, टाइल, पेण्ट, सेनेटरी, हार्डवेयर)
गोदाम- जोहार एसोसिएट्स, बच्चीनगर- १, कमलुवागांजा, हल्द्वानी
मो.- 7409440813, 7500619761

होटल माँ नन्दादेवी एण्ड बारातघर
नानासेम, मुनस्यारी
गणेश सिंह मर्तोलिया एण्ड सन्स
हार्डवेयर, बिल्डिंग मैटीरियल, जनरल आर्डर सप्लायर्स
फोन सम्पर्क- 05961-222236 8958525979, 9411134775

घर से बाहर अपनों का साथ
होटल लक्ष्य इन
मदकोट
नरेन्द्र सिंह रावत सम्पर्क 7351285555

MARTOLIA FURNITURE
A unit of Martolia Enterprises
Pilikothi, Haldwani
Mob- 8057167777, 7906752084, 8650427229

Enjoy Beauty of Himalaya at
MARTOLIA LODGE
Family Guest House-
Sarmoly, Munsiyari
A Home Away From Home & Home Stay
Phone: (05961) 222287

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी(नैनीताल) से मुद्रित।
सम्पादकः श्रीमती गीता उप्रेती फोन/मोबाइल 9458961490, 9411770280, 9411301014,
editorpighaltahimalay@gmail.com
Website- www.pighaltahimalay.com

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)